315hi29B

29

समसामयिक सांस्कतिक स्थिति

कल्पना करें, आप एक सुबह जागते हैं और खुद को एक अलग देश में पाते हैं, जहां लोग ऐसी भाषा बोलते हैं जिसे आप नहीं समझते, अलग तरह के कपड़े पहनते हैं और वैसा खाना खाते हैं जिसके आप आदी नहीं। जब तक आप उनके व्यवहार के तरीके नहीं सीख लेते, तब तक शायद आपको अपना जीवित रहना असंभव लगे। व्यवहार के ये तरीके अन्य चीजों के साथ मिलकर हमारी संस्कति का निर्माण करते हैं।

जैसा कि आप देखेंगे, हम सब संस्कृतियों में पैदा होते हैं। यह हमारे क्षेत्र, धर्म और जाति या वर्ग के अनुसार भिन्न हो सकती है। बड़े होने पर हममें से प्रत्येक व्यक्ति स्वतः लगभग दर्जनों सांस्कृतिक प्रथाएं आत्मसात कर लेता है। इनमें से अनेक प्रथाएं हमें पीढ़ियों से और उनमें से कुछ शताब्दियाँ से सौंपी जाती रही हैं, बल्कि कुछ तो सहस्राब्दियाँ पुरानी परंपराएं हैं। पर साथ ही, सांस्कृतिक प्रथाएं बदलती भी रहती है। इस पाठ में हम संस्कति के साथ अपने रिश्ते की पड़ताल करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आपः

- संस्कति को परिभाषित कर सकेंगे;
- संस्कति कैसे आकार लेती है, इसका विश्लेषण कर सकेंगे;
- सांस्कतिक अंतःक्रिया को स्पष्ट कर सकेंगे और
- वैश्वीकरण की घटना का समीक्षात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।

29.1 संस्कति से हमारा क्या तात्पर्य है

सांस्कतिक अभिव्यक्ति के रूप

जब हम रेडियो अथवा टीवी या मंच पर कोई सांस्कतिक कार्यक्रम सुनते अथवा देखते हैं तो उसमें आम तौर पर संगीत, गीत और नत्य शामिल होते हैं। इनमें से प्रत्येक

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक रूप है। ऐसा प्रत्येक रूप एक संदेश देता है। उदहारण के लिए, ध्यान में लीन बुद्ध की मूर्ति (चित्र 29.1) का आशय अमन और शांति की भावनाओं को बढ़ावा देना हो सकता है। लोकगीत/लोककथा शिक्षा और मनोरंजन प्रदान कर सकते हैं, जबकि कुतुब मीनार (29.2) जैसे बुलंद स्मारक हमें हैरानी में डाल सकते हैं। दूसरे शब्दों में, संस्कति तरह–तरह के विचार संप्रेषित करने के लिए इस्तेमाल की जा सकती है। इसके और उदाहरण हम पाठ संख्या 31 में देखेंगे।

चित्र 29.1 बुद्ध

29.2 कुतुब मीनार

भारत में हमें सांस्कतिक रूपों की एक व्यापक श्रंखला मिलती है। इनमें से कुछ– मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला, साहित्य और संगीत हैं। इनमें प्रत्येक में बहुत विविधता है। उदाहरण के लिए, अगर हम गीतों के बारे में विचार करें तो हम तुरंत उनकी कई किस्मों के बारे में सोच सकते हैं, जैसे लोकगीत, फिल्मी गीत, भजन, कव्वालियाँ आदि। हर प्रकार के गीत विशेष अवसर पर गाए जाते हैं और उनका खास प्रयोजन होता है। साथ ही, आपने ध्यान दिया होगा कि कुछ फिल्मी गीत असल में भजन हैं या लोकधुनों पर आधारित हैं। आपके खयाल में कोई फिल्मी भजन मंदिर में भक्तों द्वारा गाए जाने वाले भजन से किस रूप में अलग होता है?

29.2 लोकप्रिय अथवा लोक-संस्कति

आम लोगों ने समद्ध सांस्कतिक परंपराएँ विकसित कर ली हैं जिन्हें 'लोकप्रिय' कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'लोगों की'। लोगों ने गीत, नत्य और कथावाचन के जरिए स्वयं को अभिव्यक्त किया है और सांस्कतिक मूल्य संप्रेषित किए हैं। इन सबसे लोक–संस्कति का निर्माण होता है।

अपने सीमित भौतिक संसाधनों के कारण आम आदमी भव्य स्मारक नहीं बना सकते, पर वे छोटी–छोटी अनगिनत वस्तुएँ बना सकते हैं और उनका उपयोग कर सकते हैं, जो अत्यंत सुंदर होती हैं। इनमें से कुछ वस्तुएँ रोजमर्रा की गतिविधियों में इस्तेमाल की जाती हैं तो अन्य वस्तुएँ खास अवसरों के लिए सुरक्षित रहती हैं। दुर्भाग्य से उनमें प्रयुक्त अधिकांश सामग्री नाशवान होती है जैसे बेंत, कपड़े, लकड़ी, पत्ते या मिट्टी के बर्तन/इसलिए ये वस्तुएँ ज्यादा दिनों तक नहीं चलतीं। अतः हम प्राचीन काल से आम आदमी की संस्कृतियों के बारे में बहुत कम जानते हैं।

चित्र 29.3 कैलाशनाथ मन्दिर

29.3 शास्त्रीय संस्कति

भरतनाट्यम जैसे नत्य के रूप अक्सर शास्त्रीय कहे जाते हैं। इसका मतलब है कि यह कलात्मक अभिव्यक्ति का उत्कष्ट रूप है। इसी प्रकार कालिदास को शास्त्रीय संस्कत कवि का उदाहरण माना जाता है। चोल राजाओं द्वारा निर्मित मंदिर शास्त्रीय मंदिर–वास्तुकला के उदाहरण माने जाते हैं, इसी प्रकार ताजमहल (चित्र 29.4) मुगल वास्तुकला का उदाहरण है।

चित्र 29.4 ताजमहल

हमारा इन उपलब्धियों पर गर्व करना उचित है। लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि जिस समय कालिदास लिख रहे थे (चौथी शताब्दी में,) उस समय उत्तर और मध्य भारत में ज्यादातर लोग प्राकत भाषा (जिससे अनेक आधुनिक भारतीय भाषाएँ विकसित हुई हैं) के विभिन्न रूप बोल रहे थे। जहाँ उन्होंने कालिदास के नाटकों के प्राकत अंशों को समझ लिया होगा, वहीं उनके संस्कत श्लोकों को समझ पाने में वे असमर्थ रहे होंगे।

इसी प्रकार आम आदमी के लिए उन उत्कष्ट स्मारकों में प्रवेश करना कति रहा होगा, जिनका अभी हमने उल्लेख किया है। उनमें प्रवेश जाति या धर्म के आधार पर प्रतिबंधित रहा होगा।

इस प्रकार शास्त्रीय संस्कृति की प्रवत्ति अत्यधिक विकसित किंतु विशिष्ट होने की होती है। अभी लगभग पिछली दो शताब्दियाँ से ही संस्कत कतियों का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद होने लगा है और स्मारक आम जनता के लिए खोले जाने लगे हैं।

शताब्दियाँ से लोक और शास्त्रीय संस्कति का सह–अस्तित्व रहा है और दोनों अंतः क्रिया करती रही हैं। दोनों ने एक–दूसरे से विचार लिए और अपनाए हैं।

मानवविज्ञानी संस्कति को कैसे परिभाषित करते हैं

मानवविज्ञान का शाब्दिक अर्थ है, मानवों का अध्ययन। सांस्कतिक और सामाजिक मानवविज्ञानी वर्तमान समय के समाजों का अध्ययन करते हैं जिसमें उनके कर्मकांड, विश्वास, सामाजिक रीति–रिवाज, कार्य का प्रतिरूप आदि शामिल हैं। इसलिए जब मानवविज्ञानी संस्कति के बारे में लिखते हैं, तो वे इनमें से कुछ या सब पहलुओं को शामिल करते हैं।

पुरातत्वेत्ता और संस्कति

अपनी तरह खाने–पहनने वाले लोगों के साथ हम अक्सर कुछ समानता महसूस करते हैं, जबकि अपने से भिन्न तरीके से खाने–पहनने वाले लोगों को हम किसी अलग संस्कृति के प्राणी समझते हैं। संस्कति की यह परिभाषा पुरात्तवेताओं द्वारा दी जाने वाली परिभाषा से बहुत मिलती है। पुरातत्ववेत्ता घरों, औजारों, बर्तनों, प्रतिमाओं आदि का अध्ययन करता है और पुनर्रचना करने की कोशिश करता है कि अतीत में लोग कैसे रहते थे। चूँकि ये सब वस्तुएँ देखी और छुई जा सकती हैं और कमोबेश स्थाई होती हैं, अतः उन्हें हमारी भौतिक संस्कति का अंग माना जाता है। हमारी भौतिक संस्कति के कुछ पहलुओं की उत्पत्ति के बारे में आप अगले पाठ में और पढ़ेंगे।

हालाँकि कपड़े और भोजन भी हमारी भौतिक संस्कति के अंग हैं, पर वे तेजी से नष्ट हो जाते हैं। इसलिए हालाँकि पुरातत्ववेत्ता अक्सर प्रारंभिक कालों में इस्तेमाल किए गए भोजन और वस्त्रों के अवशेष प्राप्त कर लेते हैं, पर वे आम तौर पर बर्तन, औजार या हथियार जैसी चीजों की तुलना में कम होते हैं।

तो हम देख सकते हैं कि संस्कति कई तरीकों से परिभाषित की जा सकती है :

(क) सांस्कतिक अभिव्यक्ति के रूपों में (जैसे गीत, संगीत, नत्य, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला आदि)

(ख) किसी सांस्कतिक रूप को प्रस्तुत या इस्तेमाल करने वाले सामाजिक समूह के अनुसार (जैसे लोकप्रिय/लोक, शास्त्रीय/अभिजात)

(ग) सामाजिक, धार्मिक और भौतिक जीवन के पहलुओं के अनुसार व्यापक परिभाषाएँ।

क्या आपने ध्यान दिया कि किस तरह ये परिभाषाएँ एक–दूसरे पर व्याप्त हो रही हैं? इस मकान कमी तस्वीर (चित्र 29.5) पर नजर डालें। इसके रूप के अनुसार हम इसे (मूर्तिकला या संगीत के बजाय) वास्तुकला के उदाहरण के तौर पर वर्गीकृत करेंगे। पर साथ ही यह लोक–संस्कति का भी उदाहरण है, क्योंकि यह उन लोगों की भौतिक

चित्र 29.5 एक मकान

संस्कति का अंग है जिन्होंने इसे बनाया और इसमें रहे। अन्य उदाहरण : अजंता के चित्र शास्त्रीय धार्मिक चित्र के रूप में वर्गीकृत किए जा सकते हैं। अगले पाठ में आप बढ़ेंगे कि सांस्कतिक रूप कैसे प्रस्तुत किए जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 29.1

1. निम्नलिखित का मिलान करो:

(क) नृत्य	संस्कत काव्य
(ख) ताजमहल	सांस्कतिक अभिव्यक्ति का रूप
(ग) कालिदास	मुगल वास्तुकला
(घ) मानवविज्ञान	भौतिक संस्कति
(च) पुरातत्ववेत्ता	सामाजिक रीति–रिवाज

2. सही या गलत का निशान लगाएँ :

(1) फिल्मी गीत कभी लोकधुनों पर आधारित नहीं होते।

(2) कथावाचन लोकधुनों का अंग है।

(3) कर्मकांड हमारी संस्कति का अंग नहीं हैं।

(4) मकान, कपड़े और भोजन हमारी भौतिक संस्कति के अंग हैं।

(5) लोक और शास्त्रीय संस्कृतियों ने एक–दूसरे को प्रभावित नहीं किया।

29.4 संस्कृति कैसे आकार लेती है

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के हमारे कुछ सबसे भव्य रूप धर्म से जुड़े हैं। वास्तुकला में साँची (मध्य प्रदेश) के स्तूप, ऊपर वर्णित दक्षिण भारत के मंदिर और साथ ही दिलवाड़ा (राजस्थान) के भी, और दिल्ली की जामा मस्जिद (देखिए चित्र) धार्मिक प्रयोजनों से निर्मित सुंदर संरचनाएँ हैं।

चित्र 29.6 सांची स्तूप

धर्म युगों–युगों से हमारे कुछ सर्वोत्तम काव्यों और संगीत का भी प्रेरक रहा है। इनमें वैदिक ऋचाएँ, बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियों की रचनाएँ और, शायद सर्वाधिक प्रसिद्ध, भक्तों और सूफी संतों की कतियाँ शामिल हैं।

तमिलनाडु में वैष्णव और शैव भक्ति–साहित्य की समद्ध और सतत परंपरा रही है, जिसमें आंडाल जैसी महिलाओं की रचनाएँ भी शामिल हैं। सुप्रसिद्ध प्राचीनतम कश्मीरी कवियों में से एक लाई देद थी, जो चौदहवीं शताब्दी की महिला संत थी।

आज मीरां बाई, गुरु नानक और कबीर जैसे मध्यकालीन संत–कवि अपने–अपने क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि पूरे भारत में सम्मान पाते हैं। उनके संत छोटी मानी जाने वाली जातियों के थे और आम आदमी की भाषा इस्तेमाल करते थे। उनकी रचनाएँ, जो हमारी लोक–संस्कृति का अंग हैं, शताब्दियों तक मौखिक रूप से संप्रेषित होती रहीं।

हमारे धार्मिक विश्वास भी हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं। कभी–कभी हमारे वैवाहिक अनुष्ठान, भोजन और पहनावा धार्मिक नियमों से संचालित होते हैं। लेकिन अक्सर हमारा खानपान, पहनावा या वैवाहिक रीति–रिवाज धर्म के बजाय क्षेत्रों के अनुसार भिन्न होते हैं। एक सरल उदाहरण लें। पंजाब में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई और सिख महिलाएँ आम तौर पर सलवार–कमीज पहनती हैं, जबकि तमिलनाडु में हिंदू, मुस्लिम और ईसाई महिलाएँ आम तौर पर साड़ी पहनती हैं। इस तरह हमारे धार्मिक विश्वास हमारी सांस्कृतिक प्रथाओं को आकार अवश्य देते हैं, पर ऐसा करने वाले वे अकेले कारक नहीं हैं।

चित्र 29.7 दिलवाड़ा का मंदिर

चित्र 29.8 जामा मस्जिद

29.5 हमारी सामाजिक और आर्थिक स्थिति

हमारी अनेक सांस्कृतिक प्रथाएँ हमारी सामाजिक और आर्थिक स्थिति से प्रभावित होती हैं। उदाहरण के लिए, हमारी सामाजिक स्थिति हमारे पहनावे को प्रभावित कर सकती है। आपने देखा होगा कि विवाहित, अविवाहित और विधवा महिलाओं से अलग–अलग तरह के कपड़े पहनने की अपेक्षा की जाती है।

कभी–कभी हमारी सांस्कृतिक प्रथाएँ हमारी सामाजिक और आर्थिक दोनों स्थितियों से प्रभावित हो सकती हैं। इसमें संगीत संबंधी हमारी रुचि और प्राथमिकता जैसी चीजें आती हैं, जैसे हमें लोकगीत पसंद हैं या फिल्मी गीत, शास्त्रीय संगीत पसंद है या फिर पश्चिमी पॉप संगीत/हिंदी फिल्मों के गाने हम रेडियो वगैरह पर ही सुनकर तेजी से सीख सकते हैं, जबकि शास्त्रीय संगीत कहीं ज्यादा कठिन और महँगा है। इसमें ज्यादा समय भी लगता है और हममे से अनेक लोगों के लिए उतना समय निकालना कठिन हो सकता है।

हमारे द्वारा बनाई और इस्तेमाल की जाने वाली सांस्कृतिक वस्तुएँ भी अक्सर हमारे आर्थिक संसाधनों द्वारा सीमित होती हैं। हममें से कोई चाहकर भी ताजमहल नहीं बना सकता था। यह केवल एक बड़े और समद्ध साम्राज्य के शासक शाहजहाँ के लिए ही संभव था।

शाहजहाँ ने ताजमहल का निर्माण अपनी बेगम मुमताज महल की याद में 1632 में शुरू कराया था। इस स्मारक को बनने में लगभग बाईस वर्ष लगे, वह भी तब जबकि उसके निर्माण के प्रारंभिक चरणों में बीस हजार मजदूर रोजाना काम करते थे। उसके निर्माण की लागत चार करोड़ रुपए थी, जो उस समय की एक बड़ी भारी रकम थी।

चित्र 29.9 जोधपुर का किला

चित्र 29.10 जयपुर का किला

असल में जितने भी भव्य किले, महल और धार्मिक स्मारक हमें दिखाई देते हैं (देखिए चित्र, जोधपुर/जयपुर), उनमें से ज्यादातर शासकों द्वारा बनवाए गए हैं। शाही निवास स्थानों या पूजा–स्थलों के रूप में काम आने के अलावा वे अपने बनाने वालों की सत्ता और महिला उजागर करने का प्रयोजन भी पूरा करते थे। बहरहाल, यद्यपि भौतिक संसाधनों का महत्व है, पर वे हमेशा निर्णायक नहीं होते। मीरां बाई ने अपने आध्यात्मिक लक्ष्य पूरे करने के लिए चितौड़ के महल की धन–संपदा और शानोशौकत त्यागकर बेघरबार और आजादी का जीवन अपना लिया था। आज हम उनके गीतों को याद करते हैं, उसके पति को नहीं।

पाठगत प्रश्न 29.2

1. रिक्त स्थानों भरें :

   1. __________ का स्तूप धार्मिक वास्तुकला का उदाहरण है।
   2. वैदिक ऋचाएँ __________ संगीत का एक रूप हैं।
   3. __________ तमिलनाडु की प्रसिद्ध महिला संत थी।
   4. __________ सुप्रसिद्ध कश्मीरी कवियों में से एक है।
   5. भक्तों और सूफी संतों ने __________ की भाषा में कविताएँ लिखीं।
   6. ये कविताएँ __________ रूप में संप्रेषित हुईं।

7. हमारा पहनावा __________ के बजाय __________ के अनुसार भिन्न होता है।
8. किले और महल __________ द्वारा बनाए गए।

29.6 सांस्कृतिक अंतः क्रिया

हमारी संस्कृति अक्सर अंतः क्रिया की प्रक्रिया के जरिए आकार लेती है। ऐसा तब होता है जब विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं वाले लोग एक–दूसरे के संपर्क में आते हैं। यह संपर्क सौदागरों और व्यापारियों की खोजों और यात्राओं के जरिए घटित होता है या तब होता है जब आक्रमण–कर्ता किसी देश पर चढ़ाई करते हैं। यह तब भी घटित होता है जब यात्री या तीर्थ यात्री सुदूर देशों की यात्राएँ करते हैं, और जब कारीगर तथा मजदूर स्त्री–पुरुष रोजगार की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह आते–जाते हैं।

इन अंतः क्रियाओं में संलग्न लोग विभिन्न लोगों की प्रथाएँ सीखते हैं और अपने खुद के विचार नई जगहों पर ले जाते हैं। इस अंतः क्रिया में सहभागिता करने वाले समस्त लोगों की सांस्कृतिक प्रथाएँ बदलने लगती हैं।

भोजन का उदाहरण लें। क्या आप जानते हैं कि भारत में आलू और टमाटर जैसी सब्जियाँ लगभग पाँच सौ साल पहले पुर्तगाली व्यापारियों और सैनिकों द्वारा लाए गई थीं, जो वे मध्य अमेरिका से लेकर आए थे, और चाय चीन से आई है? अन्य खाद्य पदार्थ, जैसे चावल और दाल जो हम इस्तेमाल करते हैं, और सरसों व तिल जैसे तिलहन भारत में पाँच हजार सालों से उगाए जा रहे हैं।

अगर आप अपने आज के भोजन पर नजर डालें, तो पाएँगे कि वह परंपरागत रूप से उपलब्ध भोजन और बिलकुल हाल में जुड़ी चीजों का मिश्रण है। साथ ही, विश्व के अन्य भागों, जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन में रहने वाले लोगों में भारतीय भोजन के लिए स्वाद विकसित हो गया है, विशेषकर करी और कबाब के लिए। आगे आने वाले पाठों में आप सांस्कृतिक अंतः क्रिया और उसके प्रभावों के और उदाहरण देखेंगे।

पाठगत प्रश्न 29.3

सही या गलत का निशान लगाएँ :

1. सौदागरों के नए देशों की यात्रा करने पर सांस्कृतिक अंतः क्रिया घटित हो सकती है।
2. हमले सांस्कृतिक अंतः क्रिया की ओर अग्रसर नहीं करते।
3. चाय मध्य अमेरिका में उगाई जाती थी।
4. सरसों और तिल भारत में पुर्तगालियों द्वारा लाए गए थे।
5. करी ग्रेट ब्रिटेन में लोकप्रिय है।

29.7 वैश्वीकरण

उस प्रक्रिया का उल्लेख अक्सर वैश्वीकरण के रूप में किया जाता है, जिसके द्वारा संपूर्ण विश्व को एक एकल आर्थिक और सांस्कृतिक तंत्र के तहत लाया जा रहा है।

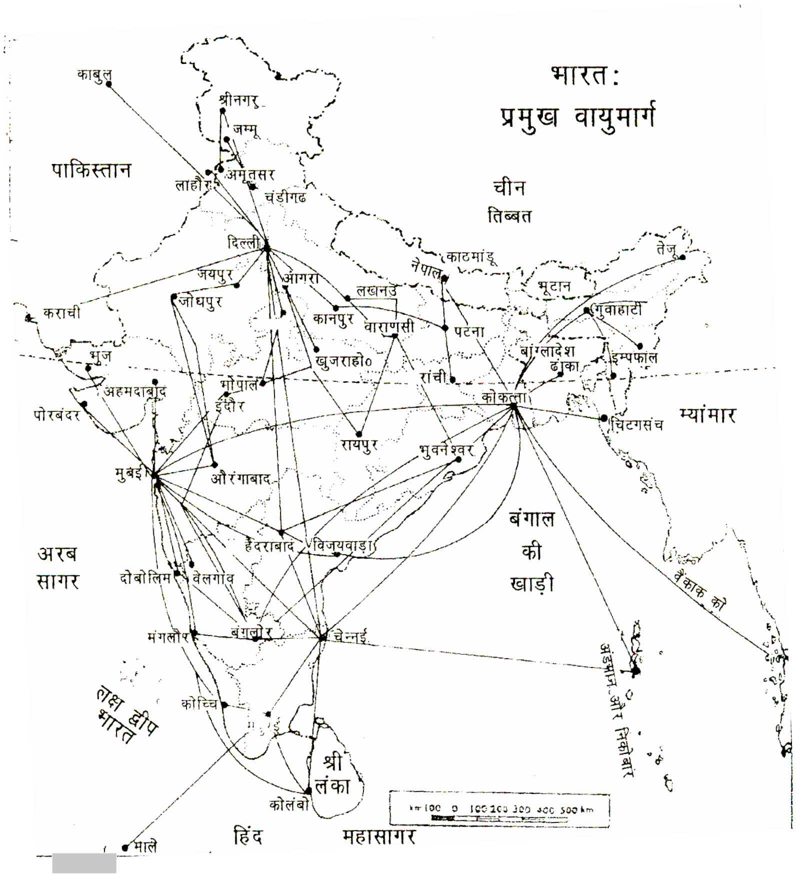

चित्र 29.11 भारत : वायुमार्ग व हवाई अड्डे

29.8 वैश्विक गाँव क्या है

आपने वैश्विक गाँव की अभिव्यक्ति सुनी होगी। पहली नजर में यह विरोधाभासी लग सकती है। कोई चीज एक ही साथ वैश्विक या विश्वव्यापी और गाँव दोनों कैसे हो सकती है?

वैश्विक गाँव का मुहावरा पहली बार मैक–लूहान नामक विद्वान द्वारा इस्तेमाल किया गया था। उसने महसूस किया कि टेलीविजन के बढ़ते प्रयोग के साथ संप्रेषण नाटकीय रूप से बदल जाएगा। इसका मतलब था कि लोग हजारों मील दूर लगभग तत्काल संदेश भेजने में कामयाब होंगे। इसके परिणामस्वरूप भौतिक दूरी अब संप्रेषण रोकने या धीमा करने वाली बाधा प्रतीत नहीं होगी।

पिछले कुछ दशकों में और खासकर पिछले दस साल में उपग्रह और अन्य सशक्त प्रौद्योगिकीय उपकरणों के इस्तेमाल से उभरे व्यापक टीवी नेटवर्क हमें विश्वास दिला

सकते हैं कि मैक–लूहान की भविष्यवाणी सच हो गई है। भारत में बैठे–बैठे हम नेल्सन मंडेला को दक्षिण अफ्रीका का राष्ट्रपति बनते या शारजहा में क्रिकेट मैच होते देख सकते हैं। लेकिन फिर हम यह पूछ सकते हैं कि क्या लोगों के बीच केवल भौतिक दूरी के ही अंतर हैं?

गाँवों में एक साथ रहने वाले लोग ज्यादातर किसान होते हैं, पर धनी भू–स्वामियों, छोटे किसानों, काश्तकारों, कारीगरों और भूमिहीन कृषि–मजदूरों के बीच स्पष्ट अंतर होते हैं। दूसरे शब्दों में, भौतिक रूप से लोग एक–दूसरे के करीब होने के बावजूद सामाजिक या आर्थिक दूरी के कारण अलग हो सकते हैं। ज्यादा ताकतवर होने के कारण भू–स्वामी गाँव में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अंतः क्रिया पर हावी रहते हैं। अतः संप्रेषण सीधा और आमने–सामने होने के बावजूद इस तथ्य से प्रभावित हो सकता है कि उसमें भाग लेने वाले लोग हैसियत में बराबर नहीं हैं।

वैश्विक गाँव में समस्या और बढ़ जाती है। यहाँ संप्रेषण पर शहरों में रहने वाले लोग हावी रहते हैं। आपने गौर किया होगा कि औसतन शहरी लोग गाँववासियों की तुलना में ज्यादा धनी और प्रभावशाली होते हैं। एक कदम और आगे जाकर हम भारत जैसे विकासशील देशों के शहरों और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों के शहरों के बीच अंतर देख सकते हैं। अमेरिकी शहरों में रहने वाले लोग आम तौर पर भारतीय शहरों में रहने वाले लोगों से ज्यादा धनी होते हैं और विकसित देशों के इन शहरों में रहने वाले लोग सामान्यतः टीवी कार्यक्रम निर्मित और प्रसारित करते हैं जिन्हें फिर हम प्राप्त करते हैं।

वैश्विक गाँव में होता यह है कि हालाँकि दूरियाँ मिट जाती हैं, लेकिन संप्रेषण एक–दिवसीय प्रक्रिया बन जाती है। हम जो कुछ टीवी–प्रोड्यूसरों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, देख सकते हैं, लेकिन कोई वास्तविक संवाद नहीं होता। इसलिए एक छोटे गाँव में आमने–सामने होने वाली बातचीत के विपरीत, जिसमें कि हम चर्चा कर सकते हैं, हस्तक्षेप कर सकते हैं, झगड़ सकते हैं और मना सकते हैं, हम सिर्फ टीवी से बहने वाले संदेश प्राप्त कर सकते हैं और अक्सर उनका अनुसरण करते हैं। जो हमें बताया जाता है, उस पर सवाल उठाना या उसे चुनौती देना बहुत मुश्किल बात है।

29.9 विज्ञापन और उपभोक्तावाद

उन कार्यक्रमों पर गौर कीजिए, जो हम रेडियो पर सुनते या टीवी पर देखते हैं–समाचार, फिल्में, टॉक–शो और विज्ञान, संगीत, इतिहास, खेलों पर कार्यक्रम–विविधतापूर्ण कार्यक्रमों की असीम श्रृंखला। बहरहाल, हम देखने के लिए कोई भी कार्यक्रम क्यों न चुनें, हम सैकड़ों नहीं तो दर्जनों विज्ञापन भी देखते हैं। ऐसा क्यों होता है? इसलिए कि विज्ञापनदाता या प्रायोजक उन कार्यक्रमों के लिए भुगतान करते हैं जिन्हें हम देखते हैं। वे आम तौर पर लोकप्रिय कार्यक्रम चुनने का ध्यान रखते हैं ताकि वे एक व्यापक दर्शक–वर्ग तक पहुँचे सकें। तब वे लाखों लोगों तक अपने उत्पाद विज्ञापित कर सकते हैं।

विज्ञापनदाता यह उम्मीद रखते हैं कि अपने पसंदीदा टीवी शो देखते हुए हम उनके उत्पादों पर गौर करेंगे और उन्हें खरीदने के लिए लालायित होंगे। दूसरे शब्दों में, उन्हें हमें अपने ब्रांडों या उत्पादों को खरीदने के लिए प्रेरित करने का अवसर मिलता है, फिर चाहे वे साबुन हों या क्रीम, कारें, घरेलू उपकरण,सूची अनंत है। अपनी तात्कालिक और

मूलभूत जरूरतों से अलग और अक्सर अपने साधनों से भी परे चीजें खरीदने की यह प्रवत्ति उपभोक्तावाद के रूप में जानी जाती है।

अतः एक ओर जहाँ दूरियाँ बेशक नाटकीय ढंग से मिटा दी गई हैं, वही नई प्रौद्योगिकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों सहित बड़े निर्माताओं के हित में इस्तेमाल की जा रही है। वे उपभोक्ताओं की विशाल जनसंख्या पैदा करते हैं जिसे अपनी कमाई विभिन्न 'जरूरत की चीजें' खरीदने पर खर्च करने, बल्कि उधार लेकर भी उन्हें खरीदने के लिए प्रेरित किया जाता है।

अपने मौजूदा रूप में वैश्वीकरण सामान्यतः अन्य सबसे बढ़कर धनी उद्योगपतियों के हित पूरे करता है। वास्तव में लाभप्रद बनने के लिए उसे सांस्कृतिक विविधता के लिए सम्मान और विश्व के संसाधनों के कुछ हाथों में केंन्द्रित होने के बजाय उनके बँटवारे पर आधारित अंतः क्रिया के रूप में विकसित होना होगा।

हमें यह भी याद रखना होगा कि वैश्वीकरण के संभावित लाभों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। टीवी कार्यक्रमों के जरिए विदेशी वस्तुएँ खरीदने के लिए प्रेरित किए जाने के साथ–साथ हम विदेशी संस्कृतियों के बारे में सीखते भी हैं। हमें निर्णय करना होगा कि कौन सी चीज स्वीकार करने योग्य है और किसे अस्वीकार किया जा सकता है। वैश्वीकरण ऐसी चीज है जिसके साथ अब हम जी रहे हैं। हमें समझना चाहिए कि हम उसके साथ अपनी शर्तों पर भी जी सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 29.4

रिक्त स्थानों को भरिए:

1. वैश्वीकरण __________ और सांस्कृतिक संप्रेषण के क्षेत्रों में जगह बनाता जा रहा है।
2. __________ का मुहावरा मैक–लूहान द्वारा गढ़ा गया था।
3. विज्ञापनदाता टीवी कार्यक्रमों को __________ करते हैं।
4. वैश्विक संप्रेषण पर __________ देश हावी हैं।

आपने क्या सीखा

संस्कृति मानव के अस्तित्व का अभिन्न अंग है। सांस्कृति अभिव्यक्ति के अनेक रूप हैं। आम आदमी द्वारा या उसके लिए प्रस्तुत रूप लोक–संस्कृति के तौर पर जाने जाते हैं, जबकि ज्यादा अनन्य रूप शास्त्रीय संस्कृति के रूप में जाने जाते हैं। संस्कृति में हमारे सामाजिक रीति–रिवाज और कपड़े व भोजन जैसी चीजें शामिल होती हैं जिनका हम दैनिक जीवन में इस्तेमाल करते हैं। हमारी सांस्कृतिक प्रथाएँ अक्सर हमारे धार्मिक विश्वासों और हमारी सामाजिक व आर्थिक स्थिति से प्रभावित होती हैं। वे लोगों के बीच

होने वाली अंतः क्रिया से भी आकार ग्रहण करती हैं। आज की स्थिति में वैश्वीकरण अंतः क्रिया का एक विशिष्ट रूप प्रस्तुत करता है। यह एक मिश्रित वरदान है। यह अक्सर उपभोक्तावाद की ओर ले जाता है। इसे अपने उत्पादों का विज्ञापन करने वाले निर्माताओं द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। फिर भी, वैश्वीकरण एक लाभदायक शक्ति है क्योंकि वह हमें दूर–दूर तक संप्रेषण करने में मदद करता है और हर प्रकार के विचारों और सूचना के आदान–प्रदान को सुविधाजनक बनाता है।

पाठांत प्रश्न

1. पाठ में वर्णित सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के समस्त रूपों की सूची बनाइए। उनमें से जो आपने स्वयं देखे और सुने हों, उन पर सही का निशान लगाइए और बताइए कि उनमें से जो आपको सबसे ज्यादा पसंद है (उदाहरण के लिए आपकी पसंदीदा पेंटिंग, गीत आदि), उसे आपने कहाँ देखा या सुना है।
2. हमारी सामाजिक और आर्थिक स्थिति जिन रूपों में हमारी सांस्कृतिक प्रथाओं को प्रभावित करती है, उनमें से कुछ रूपों का वर्णन कीजिए। क्या आप समझते हैं कि ये सभी महत्वपूर्ण हैं? अपने उत्तर के कारण लिखिए।
3. उस स्थान के बारे में सोचिए, जहाँ आप गए हों। क्या वह आपके (क) जिले में या (ख) राज्य में या (ग) देश में है? उस स्थान के लोगों की संस्कृति जिन रूपों में आपके समान या भिन्न है, उनका वर्णन कीजिए।
4. एक वैश्विक गांव में संप्रेषण के स्वरूप का वर्णन कीजिए। एक साधारण गांव के संप्रेषण की तुलना में यह किस प्रकार भिन्न है?
5. किसी दैनिक समाचार पत्र या पत्रिका से पांच विज्ञापन काटकर चिपकाइए। उनमें विज्ञापित उत्पादों का वर्णन कीजिए – वे कहां निर्मित किए जा रहे हैं, कहां उपलब्ध हैं और उनकी क्या कीमत है। विज्ञापनदाता किस तरह आपको उत्पाद खरीदने के लिए प्रेरित करता है, इसका उल्लेख कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

29.1

1 (क) सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का रूप

(ख) मुगल वास्तुकला

(ग) संस्कृत काव्य

(घ) सामाजिक रीति–रिवाज

(च) भौतिक संस्कृति

2.

1. गलत, 2. सही, 3. गलत, 4. सही, 5. गलत

29.2

1. सांची, 2. धार्मिक, 3. आंडाल, 4. लाई देद, 5. जनसाधारण,
6. मौखिक, 7. धर्म, क्षेत्र, 8. शासकों

29.3

1. सही, 2. गलत, 3. गलत, 4. गलत, 5. सही

29.4

1. अर्थव्यवस्था, 2. वैश्विक गाँव, 3. स्पोंसर, 4. विकसित

शब्दावली

मानव-विज्ञान : इसका शाब्दिक अर्थ है मानव का विज्ञान। इसमें भौतिक और सामाजिक दोनों पहलुओं पर जोर देते हुए मानवों का पूर्णता सें अध्ययन किया जाता है।

पुरातत्ववेत्ता : अतीत के समाज के भौतिक अवशेषों का विश्लेषण करने वाला और उन्हें समझने में हमारी मदद करने वाला विद्वान।

शास्त्रीय : किसी सही अनुपात रखने वाली चीज के बारे में बताने वाला शब्द। यह आम तौर पर किसी उत्कष्ट समझी जाने वाली चीज का उल्लेख करने के लिए भी इस्तेमाल होता है।

उपभोक्तावाद : वास्तविक जरूरतों की तुलना में ज्यादा वस्तुएँ और सेवाएँ चाहने और कभी–कभी सामर्थ्य न होने के बावजूद उन्हें पाने की इच्छा रखने की प्रवत्ति।

भौतिक संस्कृति : इसमें वे चीजें शामिल हैं, जिन्हें हम अपने दैनिक जीवन में इस्तेमाल करते हैं। वे विचारों के विपरीत मूर्त होती हैं यानी उन्हें हम देख और छू सकते हैं, जबकि विचार हमारी संस्कृति का अंग तो बनते हैं पर अमूर्त होते हैं।

लोकप्रिय : लोगों की कोई चीज, जिस वे आगे ले जाते हैं। इसका अर्थ वह चीज भी है जो लोगों के साधनों के भीतर होने के साथ–साथ उनके द्वारा अनुमोदित या पसंद भी की जाती है।

वैदिक ऋचाएँ : वैद संख्या में चार हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद/इनमें मंत्र हैं, जिनमें से अनेक बलि और अन्य कर्मकांडों के दौरान पढ़े या गाए जाते थे।